

पाश



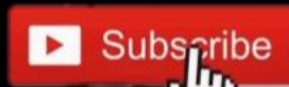
कवि



कावेता



हम लडेंगे
साथी



प्रस्तुतकर्ता- डॉ आरिफ महात

हम लड़ेंगे साथी / पाश

हम लड़ेंगे साथी, उदास मौसम के लिए
हम लड़ेंगे साथी, गुलाम इच्छाओं के लिए

हम चनेंगे साथी, जिन्दगी के टुकड़े
हथौड़ा अब भी चलता है, उदास निहाई पर
हल अब भी चलता है चीखती धरती पर

यह काम हमारा नहीं बनता है, प्रश्न नाचता है
प्रश्न के कन्धों पर चढ़कर
हम लड़ेंगे साथी

हम लड़ेंगे साथी / पाश

कत्ल हुए जज़्बों की क़सम खाकर
बझी हुई नज़रों की क़सम खाकर
हार्थों पर पड़े घट्टों की क़सम खाकर
हम लड़ेंगे साथी

हम लड़ेंगे तब तक
जब तक वीरू बकरिहा
बकरियों का मूत पीता है
खले हुए सरसों के फल को
जब तक बौने वाले खुद नहीं सूँघते
क सूजी आँखों वाली
गाँव की अर्ध्या पका का पति जब तक
युद्ध से लौट नहीं आता

हम लड़ेंगे साथी / पाश

जब तक प लस के सपाही
अपने भाइयों का गैला घांटने को मज़बूर हैं
क दफ़्तरों के बाब
जब तक लखते हैं लहू से अक्षर

हम लड़ेंगे जब तक
दुनिया में लड़ने की ज़रूरत बाकी है
जब तक बन्दूक न हुई, तब तक तलवार होगी
जब तलवार न हुई, लड़ने की लगन होगी
लड़ने का ढंग न हुआ, लड़ने की ज़रूरत होगी

हम लड़ेंगे साथी / पाश

और हम लड़ेंगे साथी

हम लड़ेंगे

क लड़े बगैर कुछ नहीं मलता

हम लड़ेंगे

क अब तक लड़े क्यों नहीं

हम लड़ेंगे

अपनी सज़ा कबूलने के लए

लड़ते हुए जो मर गए

उनकी याद जिन्दा रखने के लए

हम लड़ेंगे